[श्री स० म० बनर्जी]

चाहिये। सेल्स टैक्स के जो प्रोसीजर हैं वे इतने काम्प्लिकेटेड हैं कि हमारे बिजिनसमैनों का बिजिनेस चौपट हो जाये अगर वह सेल्स टैक्स के बहीखोते को पूरा करें। आज बिजनेसमैन करता क्या है? रिश्वत देता है, नाम बदलता है, इवेड करने की कोशिश करता है, और इससे मेरा ख्याल है कि देश का कल्याण नहीं हो रहा है। आपने टेक्सटाइल में सेल्स टैक्स को एक्साइज ड्यूटी के साथ मर्ज कर के, सोर्स प्वाइंट पर लगा कर बहुत अच्छा किया है और इसके लिये लोगों ने आपको धन्यवाद दिया है। मैं समझता हूं कि देश भर में जो कपड़ा मर्चेंट हैं उन्होंने कहा है कि यह बहुत अच्छा फैसला हुआ है।

आज देश में बेकारी बढ़ती जा रही है; बेकारी के बारे में कहा गया कि उनको ५० करोड़ बेकारी भत्ता दिया जाय। इस पर भी तो आखिर आप सोचिये। यह देश सबका देश है। मैं अगर विरोध कर रहा हूं तो इस वजह से नहीं कि मैं कोई पैदाइशी विरोधी हूं। मैं इस चीज को सोचता हूं। मेरा कोई पेशा नहीं है विरोध करना। सिर्फ एक नागरिक की हैसियत से मैं अपना फर्ज पूरा कर रहा हूं। आप करदाता की तरफ देखिये। अगर हम और आप वाकई करदाता की मदद करना चाहते हैं तो हम को और आप को मिल कर दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं को कामयाब करना है। मैं समझता हूं कि उसकी कामयाबी में देश का भला है और अगर तमाम देश का भला होता है तो मैं समझता हूं कि हमारे बालबच्चों की मुस्कराहट कायम रहेगी।

इन शब्दों के साथ मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आप इन चीजों पर विचार करें और सोचें कि किस तरीके से रिलीफ दिया जाय उस गरीब आदमी को जिस की कमर टूट रही है।

15.03 hrs.

BUSINESS OF THE HOUSE

The Minister of Parliamentary Affairs (Shri Satya Narayan Sinha): With your permission, Sir, I want to announce a slight change in the order of Government business for tomorrow, Thursday the 23rd April, 1969. The Indian Lighthouse (Amendment) Bill will be taken up for consideration and passing before taking up the motion for reference of the Arms Bill to a Joint Committee.

15.03½ hrs.

FINANCE BILL—*contd.*

The Minister of Finance (Shri Morarji Desai): Sir, I have heard with great attention and respect all that has been said on the Finance Bill by all the hon. Members who have spoken on this subject. As it is the convention or the rule that every subject can be discussed on the Finance Bill, the discussion has been very varied and interesting. But it is not possible for me to cover all those subjects, naturally, and therefore, I hope the hon. Members will bear with me if I do not refer to matters which I will not be able to refer within the time at my disposal. I want, in this connection, to take the advice of my hon. friend, Shri Bharucha, who said that the Ministers should not speak much, they should speak less. I shall certainly try to follow him in this matter at any rate though I am not able to agree with him on many other things.

Before I refer to other matters I should like to refer to one matter which has been a result of what I had referred to when I spoke last. That is as regards the mentioning of the expenditure on Parliament. My culture and refinement have also been doubted. I have no quarrel with the person who does it but I wonder sometimes when I meet him—I have been meeting him many times for the last many year—though there has been a difference between him and me about the re-organisation of